संसार के महान चित्रकार
फ्रीडा कहलो
लेखन : माइक

फ्रीडा कहलो बीसवीं सदी में मेक्सिको के महानतम कलाकारों में एक थीं। उनका जन्म १९०७ में मेक्सिको के कोयोकन शहर में हुआ था। फ्रीडा के जीवन के प्रारंभिक वर्षों में मेक्सिको क्रांति के दौर से गुज़र रहा था। यह एक ऐसी घटना थी जिसने फ्रीडा के जीवन को बहुत प्रभावित किया, और मेक्सिको के कला जगत को सदा के लिये बदल दिया।

फ्रीडा की सबसे प्रसिद्ध कलाकृतियों में से कुछ उनके स्वयं के चित्र हैं। इनमें से कई में उन्होंने अपना चित्रण ऐसी वस्तुओं के साथ किया है, जो उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण थीं।

फ्रीडा को विशेषरूप से पसंद था फूलों, पौधों, जंगलों, जानवरों आदि के चित्र बनाना। इसके अलावा वस्त्रों, आभूषणों, और मेक्सिको के देवी-देवताओं के चित्र बनाना भी उन्हें बहुत अच्छा लगता था।
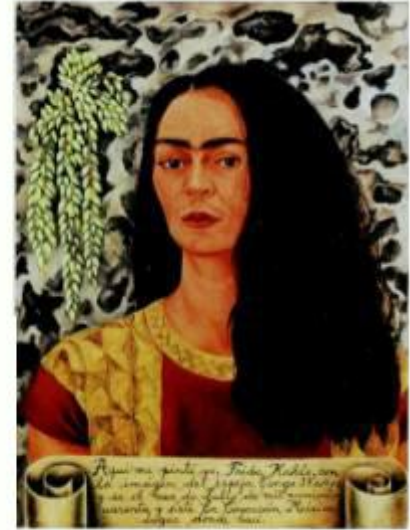
अपने बहुत से चित्रों में फ्रीडा ने अपने जीवन के अप्रिय अनुभवों का चित्रण किया है। ये चित्र प्रायः लोगों को विचलित करने वाले होते थे। लेकिन फ्रीडा को ऐसे चित्रों को बनाना अपने कठिन समय से पार पाने के लिए आवश्यक प्रतीत हुआ।

अगले पृष्ठ पर दिखाई गई कलाकृति "आशाहीन" एक गंभीर बीमारी के बाद बनाई गई थी। फ्रीडा बहुत कमज़ोर हो गई थीं और उनकी भूख समाप्त हो गई थी। उनके डॉक्टर चाहते थे कि वह काफ़ी मात्रा में तरल भोजन लें। लेकिन जबरन खाना खाने के विचार मात्र से फ्रीडा को घृणा सी हो गई थी। इस चित्र में उन्होंने अपनी इसी मनोदशा का चित्रण किया है।

फ्रीडा ने इस प्रकार की विचलित करने वाली कृतियां केवल स्वयं के लिए ही बनाई थीं। इसलिए उन्हें थोड़ा आश्चर्य होता था जब दूसरे लोग उनमें कोई रुचि दिखाते थे।

फ्रीडा कहलो ने अपने जीवन में बहुत दुःख और कष्ट झेले। जब वे ५ वर्ष की थीं तब उन्हें पोलियो जैसी गंभीर बीमारी हो गई। जब उनकी तबियत सुधरी तो उनकी दाहिनी टांग दुबली और कमज़ोर हो चुकी थी।

उनकी टांग को सुधारने के लिए उनके माता पिता ने उनसे बहुत से शारीरिक व्यायाम करवाए, जैसे फुटबॉल खेलना, तैराकी, साइकिल चलाना, और यहाँ तक कि बॉक्सिंग भी।
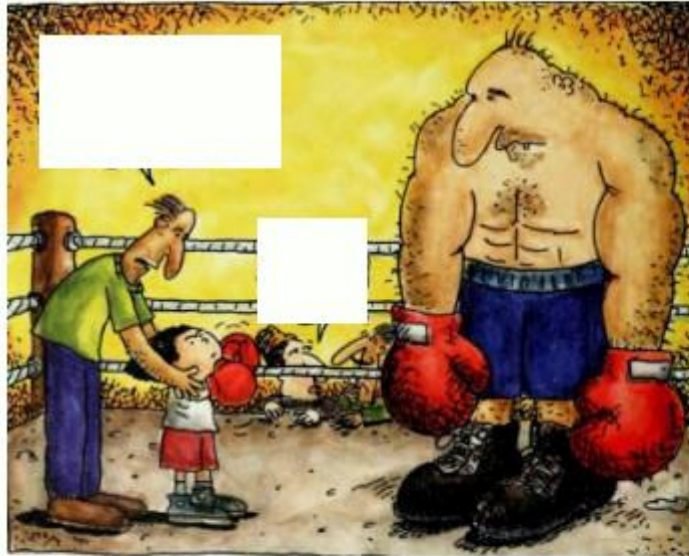
लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। मोहल्ले के बच्चे उन्हें "खूंटा-पांव फ्रीडा" कह कर चिढ़ाने लगे।

फ्रीडा अपने पांव को छिपाने के लिए लम्बी पतलून या अन्य लम्बे वस्त्र पहनने लगीं। वह नहीं चाहती थीं कि लोग उन्हें दूसरों से भिन्न समझें, उन पर हमदर्दी जतायें, या उनका मज़ाक उड़ाएं।

फ्रीडा अक्सर ही पौधे, पत्थरों के टुकड़े, कीट-पतंग, छोटे जीव-जंतु, व इस प्रकार की अन्य वस्तुएं घर ले आया करती, और उनका अध्ययन करती। उसके पिता पेशे से फोटोग्राफर थे और कला में भी रुचि रखते थे।

फ्रीडा कहलो बचपन से ही बहुत जिज्ञासु प्रवृत्ति की थीं। प्रकृति और विज्ञान के बारे में जानने की उनमें विशेष रूचि थी। उनके पिता को यह बात पसंद थी, और वह फ्रीडा को अधिक से अधिक सीखने के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे।

उन्हें भी अनेक प्रकार के विषयों में रुचि और जिज्ञासा थी। उन्होंने अपनी बेटी को मेक्सिको के प्राचीन वास्तु-शास्त्र व अन्य कलाओं के बारे में शिक्षा दी। उन्होंने फ्रीडा को कैमरा इस्तेमाल करना, और फोटोग्राफी के अन्य गुर सिखाये, जैसे कि फोटोग्राफ में रंग भरना। जब फ्रीडा स्वयं चित्रकार बनीं तो यह ज्ञान उनके बहुत काम आया।

फ्रीडा का स्कूल देश के सबसे अच्छे स्कूलों में गिना जाता था। यह मेक्सिको सिटी के बीचों-बीच स्थित था। हाई स्कूल में फ्रीडा ने पढ़ा कि मेक्सिको की क्रांति वहां के लोगों के लिए कितनी महत्वपूर्ण थी।

क्रांति से पहले हज़ारों लोगों के साथ गुलामों का सा बर्ताव होता था। वे बहुत गरीब और अशिक्षित थे, और अधिकतर लोग पूरा दिन खेतों में मज़दूरी करते थे।

मेक्सिको की जनता ने १९१० में पांचो विला और एमिलिआनो ज़पाता जैसे कुछ नायकों के नेतृत्व में सरकार के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया, और इस क्रांति से एक न्यायसंगत जीवन जीने का अधिकार पाया।

नई सरकार का पहला काम यह था कि उसने बहुत से चित्रकारों से सरकारी इमारतों की दीवारों पर बड़े-बड़े चित्र बनवाये, जिन्हें आम जनता देख सके। इन भित्ति-चित्रों में मेक्सिको के इतिहास को दर्शाया गया था। इनका उद्देश्य था कि अनपढ़ जनता भी अपने इतिहास को जाने, अपने देश पर गर्व महसूस करे, और भविष्य की ओर उम्मीद से देख सके।

इन भित्ति चित्रकारों में सबसे प्रसिद्ध थे डेविड सिक्वेरोस, जोस ओरोज़को, और डिएगो रिवेरा। इन कलाकारों ने पुरातन मेक्सिको की कला शैली और उसके रंगों से प्रेरणा पाई थी। मेक्सिको की जन-प्रचलित कला शैली ने भी उन्हें प्रभावित किया था, जैसे कि जोज़ पोसाडा के जीवंत चित्रों ने। उन्होंने सोच समझकर यूरोपीय कला शैली से दूरी बनाए रखी, हालाँकि क्रांति के पहले वही सर्व प्रचलित कला शैली थी।

जब फ्रीडा १४ वर्ष की थीं, डिएगो रिवेरा एक भित्ति-चित्र बनाने उनके स्कूल में आये। हाई स्कूल में फ्रीडा की गिनती सबसे शरारती बच्चों में होती थी।

वह अपने अध्यापकों और अन्य अधिकारियों तो अक्सर तंग करती रहती थीं। जब डिएगो चित्र बना रहे थे, फ्रीडा ने उनके साथ भी ऐसी ही शरारतें कीं, और उन्हें "मोटे बुढ़ऊ" जैसे नामों से पुकारा।

फ्रीडा की चित्र कला में कोई विशेष रुचि नहीं थी, लेकिन जीवन की एक अप्रिय घटना ने इसे बदल दिया। एक दिन स्कूल से घर आते समय उनकी बस बुरी तरह दुर्घटना ग्रस्त हो गई। कुछ लोगों की तो मौत भी हो गई। फ्रीडा को भी बहुत चोट आई, और उन्हें कई महीनों तक अस्पताल में रहना पड़ा। उनकी हड्डियां कभी भी पूरी तरह ठीक नहीं हो पाईं। उन्होंने काफी पीड़ा झेली, और कई बार ऑपरेशन भी करवाना पड़ा।

ऐसे समय में फ्रीडा ने चित्रकला को अपनाने का निश्चय किया। वह बिस्तर में लेटी-लेटी उकता जाती थीं, और उन्हें स्वयं को व्यस्त रखने के लिए कुछ करने की आवश्यकता थी। फ्रीडा ने अपने पिता से कुछ ब्रश और पेंट मांगे। मां ने फ्रीडा के लिए एक खास कैनवस बनवाया ताकि फ्रीडा बिस्तर में लेटे-लेटे ही चित्रकारी कर सकें।
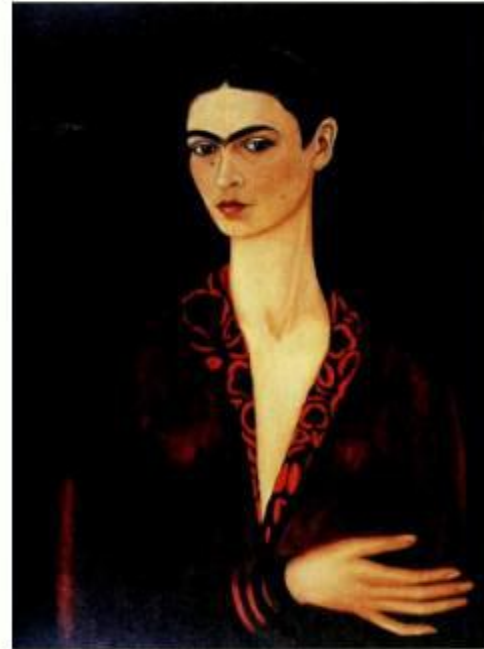
फ्रीडा के शुरुआती चित्र थे अपने दोस्तों के, परिवारजनों के, और सर्वप्रथम अपने स्वयं के।

शुरू में फ्रीडा ने बिना किसी शिक्षक के स्वयं ही चित्रकारी सीखी। उन्होंने अपने पिता की चित्रकला सम्बंधी पुस्तकों का अध्ययन किया, और बोत्तिसेली व मोदिग्लिआनी सरीखे महान यूरोपीय चित्रकारों की कलाकृतियों की नक़ल बनाने की कोशिश की।

लेकिन जल्दी ही मेक्सिको के भित्ति चित्रकारों की तरह, फ्रीडा का रुझान भी अपने देश की लोक-कला की तरफ ही आकर्षित होने लगा। इन लोक-कलाकृतियों की ऊर्जा और उनमें चित्रित सीधी सादी कहानियां उन्हें बहुत पसंद आती थीं।

इन कलाकृतियों में कुछ ऐसा जादू सा भरा था कि मेक्सिको की आम जनता को वे अपने ही जीवन का एक हिस्सा प्रतीत होती थीं। मेक्सिको की पुरातन रेड-इंडियन कला और धार्मिक कृतियों में फ्रीडा को एक रहस्यमयी शक्ति सी प्रतीत होती थी।

इस लोक-कला में फ्रीडा ने जो कुछ देखा, वे उसका समावेश अपने चित्रों में भी करने लगीं।

फ्रीडा को चित्र बनाने में आनंद आने लगा। इससे उन्हें अपनी तबियत में भी सुधार महसूस होता था। शीघ्र ही इतना सुधार हो गया कि वे फिर से चलने फिरने लगीं। फ्रीडा ने तभी निश्चय कर लिया कि वह अब किसी कष्ट, पीड़ा या बीमारी को अपनी ख़ुशी के रास्ते में नहीं आने देंगी। वह लगातार पेंटिंग बनती रहीं, अपने दोस्तों से मिलती और पार्टियों में जाती रहीं।

एक बार एक पार्टी में उनका परिचय डिएगो रिवेरा से हुआ। उन्होने फ्रीडा को नहीं पहचाना क्योंकि वह अब बड़ी हो चुकी थीं, और उनकी शक्ल सूरत में काफी बदलाव आ गया था।

लेकिन कुछ दिन बाद, जब डिएगो एक भित्ति चित्र बना रहे थे, फ्रीडा उनसे मिलने आयी, और अचानक उन्हें फ्रीडा के स्कूल में हुई मुलाकात याद आ गयी। फ्रीडा अपनी कुछ पेंटिंग डिएगो को दिखा कर उनकी राय जानना चाहती थीं। हालाँकि सालों पहले फ्रीडा ने डिएगो का मज़ाक उड़ाया था, वह उनसे बहुत प्रभावित थी, और उनके हुनर का आदर करती थीं।
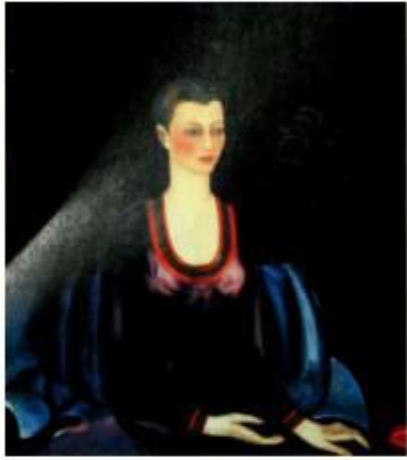
डिएगो को फ्रीडा का काम बहुत पसंद आया। अब चूँकि फ्रीडा बड़ी हो चुकी थीं, डिएगो को उसकी ओर आकर्षण महसूस हुआ। अपनी अन्य पेंटिंग दिखाने के लिए फ्रीडा ने डिएगो को अपने घर आमंत्रित किया।

डिएगो फ्रीडा के घर अक्सर आने-जाने लगे। दोनों एक दूसरे को समझने और अक्सर मिलने जुलने लगे। शीघ्र ही दोनों को एक दूसरे से प्रेम हो गया। हालाँकि डिएगो, फ्रीडा से बीस साल बड़े थे, दोनों ने जीवनसाथी बनने का निश्चय किया।

डिएगो ने हमेशा फ्रीडा की चित्रकारी को प्रोत्साहन दिया। उन्हें अपनी प्रतिभाशाली पत्नी पर गर्व था। फ्रीडा ने भी डिएगो से बहुत कुछ सीखा। उनके लिए डिएगो एक उत्कृष्ट कला शिक्षक साबित हुए।

अब फ्रीडा एक सबसे प्रसिद्ध कलाकार की पत्नी थीं। शुरू में फ्रीडा को अपने पति के साथ रहना और उनका ख्याल रखना बहुत अच्छा लगा। अपने पति को चित्र बनाते हुए देखने में उन्हें आनंद आता था। लेकिन फ्रीडा ने स्वयं चित्र बनाना छोड़ सा दिया था।

१९३० में डिएगो को अमेरिका में भित्ति-चित्र बनाने का निमंत्रण मिला। डिएगो और फ्रीडा वहां गए और सब जगह उनको बहुत प्रशंसा मिली। दोनों की जोड़ी खूब जंचती थी, और लोग उनके संपर्क में आनंदित होते थे। दोनों को धनवान और प्रसिद्ध लोगों की पार्टियों में बुलाया जाता था।

लेकिन फ्रीडा और डिएगो के बीच सब कुछ ठीक-ठाक नहीं चल रहा था। अक्सर उनके बीच गंभीर मतभेद और विवाद होने लगे। एक मतभेद इस बात को लेकर था कि अमेरिका में कितना समय बिताना चाहिए। डिएगो को अमेरिका के आधुनिक शहर बहुत अच्छे लगते थे, लेकिन फ्रीडा को वहां बिलकुल अच्छा नहीं लगता था। उन्हें घर की याद आती, और वह मेक्सिको वापस जाना चाहती थीं।

अगले पृष्ठ की पेंटिंग में फ्रीडा ने अमेरिका के बारे में अपनी भावनाओं को दर्शाया है। इसमें उन्होंने भीड़-भड़क्के से भरे न्यूयॉर्क शहर का चित्रण किया है, जिसमें चारों तरफ कारखाने, कूड़ा-करकट और प्रदूषण नज़र आता है। फ्रीडा इस पेंटिंग में कहीं नज़र नहीं आतीं। लगता है वो मेक्सिको वापस चली गई हैं, और केवल अपनी पोशाक पीछे छोड़ गई हैं।

कई बार किसी गंभीर वाद-विवाद के बाद फ्रीडा और डिएगो एक दूसरे से अलग रहने लगते। ऐसे समय में वह पेंटिंग बनाने में अधिक समय बितातीं। उनकी सर्वोत्तम कलाकृतियों में से अनेक ऐसे समय ही बनाई गई थीं।

फ्रीडा कहलो अपनी भावनाओं का चित्रण एक अनूठे और अनदेखे अंदाज़ में करती थीं। समय के साथ उनकी कलाकृतियां उतनी ही प्रसिद्ध होने लगीं जितनी उनके पति की। ये कलाकृतियां फ्रीडा के लिये अपने सुखों-दुःखों, कुंठाओं और आशा-निराशाओं को अभिव्यक्त करने का माध्यम बन गई थीं। उनकी कलाकृतियां ऐसे रंगों और आकृतियों से भरी थीं जिन्हें फ्रीडा जैसा सच्चा देशप्रेमी ही व्यक्त कर सकता था।
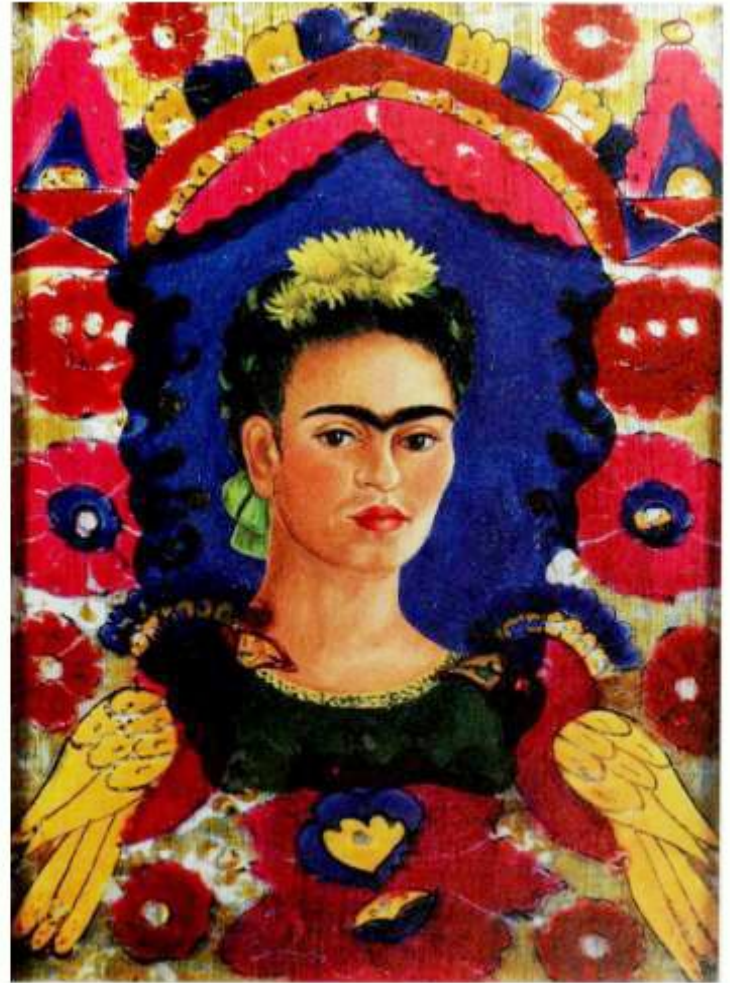
फ्रीडा कहलो का स्वास्थ्य उनके लिये जीवन भर एक गंभीर समस्या बना रहा। १९५४ में उनकी मृत्यु हो गई। लेकिन जीवन के शुरू में ही फ्रीडा ने निश्चय कर लिया था कि वह ज़िन्दगी को जी भर के जियेंगी।

वह हमेशा अपने बालों को संवारने और सुन्दर कपड़ों से सजने में पूरा समय लगातीं थीं। उनके कुछ मित्र कहते कि जब वह सज-धज कर निकलतीं, तो स्वयं भी एक कलाकृति सी दिखाई देती थीं।

समाप्त